**अपैशुनम् सद्गुण**

भगवद गीता, १६ अध्याय (श्लोक २) में **अपैशुनम्** को दैवी गुण बताया गया है |

अपैशुनम् गुण का अर्थ है किसी भी विधान, परिस्थिति, व्यक्ति में दोष दृष्टि न रखना i.e. Absence of fault finding (also a leadership quality).

इस विषय में तीन तथ्य सावधानी से समझना आवश्यक है –

* जब हम सब (चर और अचर) में **ईश्वर को नहीं देखते**, तो हमें न चाहकर भी दोष दिख सकता है
* **कामना की आपूर्ति** के कारण हम व्यक्ति, वस्तु, घटना, परिस्थिति पर दोष डाल सकते हैं
* **हमें अपने दोष नज़र न आते हों** या फिर हमें ऐसा लगता हो की हमारे दोष तो बहुत छोटे हैं, ज़्यादा सोचने की आवश्यकता नहीं है (due to ego or denial of truth or lack of commitment)

शास्त्र का मत है की परनिंदा (दोष दृष्टि का एक रूप) घोर पाप है | अपैशुनम् के बिना समभाव अवस्था (दीर्घकाल) असंभव है क्यूंकि जैसे ही किसी में दोष देखा, वैसे ही उस बुराई का मन में चिंतन शुरू हो जाता है |

**पूज्य बाबू जी (श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार)** के वचन हैं की "*दूसरों की बुराइयाँ मत देखो | बुराइयाँ देखने से बुराई का चिंतन होता रहता है, और जैसा चिंतन होता है, चित्त भी वैसा ही बनता चला जाता है |*"

अपैशुनम् गुण को धारण करने के बाद मन में अत्यंत शान्ति का अनुभव होता है | परन्तु अपैशुनम् आधी विजय होगी यदि हमने अपने दोषों की ओर से दृष्टि हटा ली क्यूंकि हम इश्वर के सौम्य रूप हैं और हमें सब प्रयास करने है, गुरु के मार्गदर्शन को साथ लेकर, जिससे हम अपना उद्धार कर सकें और मनुष्य जीवन का लक्ष्य पा सकें |

**निष्काम कर्म में कभी दोष दर्शन नहीं होता**, इसलिए यदि हमें कभी दोष का आभास या संकेत हो, तो सावधान हो जाना चाहिए की हमारा कर्म सकाम हो गया है और तुरंत हमें वैराग्य (गुण) को धारण करके निष्काम हो जाना चाहिए | पैशुनम् से हम अपने शत्रु बनते हैं और अपैशुनम् से अपने मित्र | दोष दर्शन दुःख का मार्ग है |

*श्री रामचरितमानस के उत्तरकाण्ड (दोहा १२१) में अपैशुनम् पर मार्गदर्शन है:*

***परम धर्म श्रुति विदित अहिंसा | पर निंदा सम अध न गरीसा ||***

वेदों में अहिंसा को परम धर्म माना है और परनिंदा के समान भारी पाप नहीं है |